प्रातः सभा 1-12-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप ब्रह्मा द्वारा राय दे रहे हैं याद करो तो यह बनेंगे। सतोप्रधान बन अपने पैराडाईज राज्य में प्रवेश करेंगे। यह सिर्फ तुमको नहीं कहते हैं, परन्तु यह आवाज तो सारी भारत बल्कि विलायत में भी यह आवाज़ जायेगा सभी के पास। बहुतों को सा० भी होगा। किसका सा० होगा यह भी बुधि से काम लेना चाहिए। बाप ब्रह्मा द्वारा ही सा० कराकर कहते हैं, प्रिन्स बनना है तो जाओ ब्रह्मा वा ब्राह्मणों के पास। युरोपवासी भी यह समझने चाहते हैं। भारत पैराडाईज था तो किसका राज्य था यह पूरा कोई जानते ही नहीं। भारत ही हेविन स्वर्ग था। अभी तुम सभी को समझा रहे हो यह सहज राजयोग है जिससे भारत स्वर्ग अथवा हेविन बनता है। विलायत वालों की फिर भी बुधि कुछ अच्छी है वह झट समझेंगे। यह तो बिल्कुल ही तमोप्रधान बुधि हैं। तो अभी सर्विसएबुल बच्चों को क्या करना चाहिए, उन्हों को ही डायरेक्शन देनी पड़ती है। बच्चों को प्राचीन राजयोग सिखाना है। तुम्हारे पास म्युजियम प्रदर्शनी आदि में बहुत आते हैं, ओपनिंग लिखते हैं कि यह बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। परन्तु खुद समझते नहीं हैं। थोड़ा कुछ टच होता है तो आते हैं। फिर भी बरोब अपना अच्छा अच्छा भाग्य लेंगे। समझने का पुरुषार्थ करेंगे। साहुकारों को तो पुरुषार्थ करना न है। देह-अभिमान बहुत है ना तो ड्रामा अनुसार जैसे बाबा ने दण्ड दे दिया है। फिर भी उन द्वारा आवाज़ कराना पड़ता है। विलायत वाले तो यह नालेज चाहते हैं। सुन कर बहुत खुश हो जायें। गवर्मेन्ट के आफीसर्स पिछाड़ी कितनी मेहनत करते हैं। परन्तु फुर्सत ही नहीं उन्हों को। भल घर बैठे सा० भी हो जाये तो भी बुधि में नहीं आवेगा। तो बच्चों को बाबा राय देते हैं ओपनिंग अच्छे2 इकट्ठे करके फिर उनका एक अच्छा किताब बनावे। राय दे सकते हैं देखो कितने सभी को यह अच्छा लगता है। विलायत वाले या भारतवासी भी सहज राजयोग जानने चाहते हैं। स्वर्ग के देवी देवताओं की राजाई जो सहज राजयोग से भारत को प्राप्त होती है तो क्यों न यह म्युजियम गवर्मेन्ट हाउस के अन्दर लगा दें जहां संगठन आदि होते रहते हैं। यह ख्यालात बच्चों की चलनी चाहिए। अभी टाईम लगेगा। अभी इतने नर्म बुधि नहीं होंगे। गाडरेज का ताला बुधि को लगा हुआ है। अभी आवाज निकले तो सीरियुलेशन हो जावे। हां होने का है जरूर। बोलो गवर्मेन्ट हाउस में भी म्युजियम हो तो बहुत फारेनर्स भी आकर देखें। विजय तो बच्चों की जरूर होनी है। तो ख्यालात चलनी चाहिए। देहीअभिमानी को ही ऐसी ख्यालात आवेंगी कि क्या करना चाहिए जो विचारों को चालू पड़े और बाप से वरसा लेवे। हम लिखते भी हैं बिगर कोई कौड़ी खर्चा। तो अच्छे2 जो आते हैं राय देनी है, डिप्टी प्राईमिनिस्टर, ओपनिंग करने आते हैं फिर प्राईम मिनिस्टर, प्रेजीडेन्ट भी आवेंगे। क्योंकि उन्हों को भी जाकर बतावेंगे यह तो वन्डरफुल नालेज है। सुप्रीम शांति तो ऐसे स्थापन होनी है, जंचता है। समझानी है जंचने जैसी। आज न जचेंगे तो कल जचेंगे। बाबा कहते रहते हैं बड़े2 आदमियों पास जाओ, आगे चल यह सभी समझेंगे। जैसे कोस्टर शादियों के लिये बनाते हैं। जितना बड़े2 आदमी उतना ही बड़े2 हाल में शादी। यह है कल्याण होने का जलसा। तो उन्हों को भी धीरे2 समझाना होता है। उन्हों की ट्रस्टी भी कोई कैसे कोई कैसे होते हैं। बम्बई में ल०ल०ना० के मंदिर में कोस्टर बनाया था। फिर देखा शादी इतनी नहीं होती है तो फिर होटल वाले को दे दिया। यह भी तो खराब काम है। ल०ना० के मंदिर में फिर होटल। मनुष्यों की बुधि बिल्कुल ही तमोप्रधान है ना जो ऐसे2 काम करते हैं। दिन प्रति दिन तमोप्रधान होते जाते हैं। तुम समझाने की कोशिश करते हो कि यह कल्याण करने का धंधा आदि बन्द करो। अपनी उन्नति करो। भूत पिलाना बन्द करो। बाप आये हैं पवित्र देवता बनाने। आखीरीन वह दिन भी आवेगा जो गवर्मेन्ट हाउस में भी म्युजियम होगा। टेम्परारी तो हुआ है ना तो समझाया जाता है क्यों यह स्थाई बन जाये। जब बहुतों को ओपनिंग मिले। बोलो खर्चा तो हम अपना करते हैं। गवर्मेन्ट सच्च में तो कब पैसा न देगी। तुम बच्चे कहेंगे हम अपने खर्चा से हरेक गवर्मेन्ट हाउस में यह म्युजियम लगा सकते हैं। एक बड़ी गवर्मेन्ट हाउस में म्युजियम हो जाये तो फिर सभी प्रबन्ध हो जावेगा। फिर समझाने वाला भी जरूर चाहिए

उनको कहेंगे टाईम मुकर्र करो जो कोई आकर रास्ता बतावे। हम बिगर कौड़ी खर्चे हैविन जाने का रास्ता बतावेंगे। आगे यह होने का है। परन्तु बाप बच्चों को दूरन्देशी बनाते हैं। अच्छे2 बच्चे जो अपने को महावीर समझते हैं, उनको ही माया नाक से पकड़ती है। आधा कल्पों की जरूर हरावेंगी। जो देह अभिमान में आते हैं उनको नाक से पकड़ती हैं। बड़ी ऊंची मंजिल हैं। बड़ी खबरदारी रखनी है। वाकसिंग कम नहीं। बड़ी ते बड़ी वाकसिंग है। रावण को जीतने का युध का मैदान है। थोड़ा भी देह अभिमान आया, मैं ऐसे सर्विस करता हूं यह करता हूं, यह मेरा। मेहनत है बहुत। हम तो गाडली सर्वेन्ट हैं। हमको पैगाम देना ही है। इसमें गुप्त मेहनत बहुत हैं। तुम योग और योगबल से ही अपने को सजाते हो। इसमें गुप्त रह विचार सागर मथन करे तबनशा चढ़ता रहे। यह भी सर्विस करेंगे। ऐसे प्यार से समझावेंगे। बेहद के बाप का वरसा हर कल्प भारतवासियों को मिलता है। 5000 वर्ष पहले इन(ल0ना0) का राज्यथा ना। अभी तो कहा जाताहै वेश्यालय। सतयुग है शिवालय। वही शिव बाबा की स्थापना है। यह है रावण की स्थापना। रात दिन का फर्क है। परन्तु बन्दर बुधि कुछ भी समझते नहीं हैं। गायन भी है बन्दरों के आगे रत्न रखो वह पत्थर समझ फेंक देंगे। रामायण में भी बन्दर सेना का वर्णन है। यह बन्दर सेना है ना। दिखाते हैं राम ने बन्दर सेना ली। रावण ने बन्दर बनाये। राम फिर उस सेना को लायक बनाकर रावण पर जीत पहनाते हैं। यह बड़ी समझने की बातें हैं। बच्चे फील करते हैं बराबर हम क्या बन गये हैं थे। अभी बाप आया हुआ है आप समान बनाने। मूल बात है देही अभिमानी बन का। देही अभिमानी हो विचार करना होता है। आज हमको फलाने प्राईमीनिस्टर को समझाना है। उनको दृष्टि दें जो सा0 भी हो सकता है। तुम दृष्टि दे सकते हो। अगर देही अभिमानी हो रहो तो तुम्हारी बैटरी भरती जाती है। देहीअभिमानी हो बैठो तब बैटरी भर सके। गरीब झट अपनी बैटरी भरते हैं। क्योंकि वह बाप को बहुत याद करते हैं। जिन्हों में ज्ञान बहुत अच्छा है योग कम है तो बैटरी भर न सके। क्योंकि अपना देह का बहुत रहता है। योग कुछ भी है नहीं। इसलिये ज्ञान बाण में जौहर नहीं भरता। तलवार में भी जौहर भरता है। वही तलवार देखो 10 रुपये की, वही तलवार देखो 500रुपये की भी होगी। गुरुगोविन्द सिंह की तलवार का कितना गायन है। इसमें कोई हिंसा की बात नहीं। यह है योगबल की तलवार। वह जौहर चाहिए। हिंसा की बात नहीं। देवतायें हैं डबल अहिंसक। वही फिर अभी डबल हिंसक बने हैं। आज डबल हिंसक कल डबल अहिंसक। आज भारत ऐसा है कलऊ ऐसा बनेगा। आज रावण राज्य कल रामराज्य। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। कल हम रावणराज्य में थे तो नाक में दम था। आज हम परमपिता परमात्मा साथ रह हैं। तुम ईश्वरीय परिवार के हो ना। सतयुग में तुमको ईश्वरीय परिवार नहीं कहेंगे। वहां होगा दैवी परिवार। यह है ईश्वरीय परिवार। बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। बाप का कितना प्यार मिलता है। आधा कल्प कौरवों का प्यार मिलने से बन्दर बन जाते हैं। अभी बेहद के बाप का प्यार मिलने से तुम देवता बन जाते हो। 5000वर्ष की बात है। उन्होंने लाखों वर्ष लगा दिया है। यह भी तुम्हारे जैसा पुजारी था। सभी से लास्ट नम्बर में आ के खड़ा है। योगबल हो तो कोई को समझाने से तीर भी लगे। योगबल नहीं है तो किसकी बुधि ठका2 नहीं होता है। योगबल अच्छा होगा तो जौहर भरेगा। यह भी बाप ने समझाया है भक्ति मार्ग के शास्त्रों से मुक्ति प्राप्ति नहीं हो सकती। और ही पूरी दुर्गति को पाते हैं। सतयुग में तुमको कितना अथाह सुख रहता है। कितना धन रहता है। जो फिर बाद में मंदिरों में भी इतना अथाह धन था। जिसको आकर लूटा। मंदिर तो और भी होंगे ना। प्रजा की भी तो मंदिर होंगी। प्रजा भी बहुत साहुकार होते हैं। प्रजा से राजा लोग कर्जा उठाते हैं। यह बहुत गंदी दुनिया है। सभी से गंदा मुल्क है कलकत्ता। जो भी साहुकार होंगे वह भाईयों को अलग मकान बनाकर देते हैं। घर वाली को कुछ नहीं देते। इसलिये इसका नाम ही है वेश्यालय। इनको चेंज करने की तुम बच्चों को मेहनत करनी है। जो करेंगे वह पावेंगे। देह अभिमान आया और गिरा। जन्मसामव का अर्थ भी कोई समझते थोड़ेही हैं। संस्कृत में —

46,418
39,19,861
(vi) Expenditure of Capital nature on Scientific Research
(vii) Carried forward loss (Approximate)
I. The profits or losses have been arrived at after charging all expenses of manufacture, working and management and after making

9-12-62

श्लोक सिर्फ कंठ कर लेते हैं। समझने लिये उनमें ज्ञान तो हो न सके सिवाय तुम ब्राह्मणों के। कोई भी मठ-पंथ वाला देवतावन न सके। पहले प्रजापिता ब्रह्माकुमारियां, और कुमार बनने विगरदेवता कैसे बनेंगे। जो कल्प पहले बने हैं वही बनेंगे। टाईम लगता है। झाड़ बड़ा होगा तो फिर बुधि को पता जावेगा। अभी झाड़ कितना पुराना हो गया है। फिर अब नया कल्प लगता है। ब्राह्मण बन जायेंगे। चिंटी मार्ग से हिंग मार्ग होगा। तो बाप समझाते हैं मीठे2 बच्चों बाप को याद करते रहो। और स्वदर्शनचक्र फिराते रहो। सभी को पुरुषार्थ कराना है। गांवों की भी सर्विस करनी है। तुम्हारी बुधि में सारा 84 का चक्र है। तुम ब्राह्मण ही फिर देवता और क्षत्री घराणेके बनते हो। सूर्यवंशी चन्द्रवंशी अक्षर का भी अर्थ कोई समझते नहीं। मेहनत कर समझाया जाता है फिर भी नहीं समझते तो समझा जावेगा अभीसमय नहीं है। फिर भी आते तो हैं ना। समझते हैं ब्रह्माकुमारियों का बाहर में नाम ऐसा है। अन्दर देखते हैं यह तो बहुत अच्छा काम कर रही हैं। यह तो मनुष्य मात्र के कैरेक्टर्स सुधारने का रास्ता बताया जाता है। देवताओं के कैरेक्टर्स देखो कितने अच्छे हैं। सम्पूर्ण निर्विकारी हैं ना। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। इन 5भूतों के कारण ही तुम्हाराकैरेक्टर्स विगड़ा हुआ है। जिस समय समझाते हो उस समय अच्छा सुनते हैं फिर बाहर जाने से भूल जाते। तब कहा जाता है सौ सौ के श्रृंगार .... शुरू में बाबा बहुत समझाते थे। कहते थे यह तो बाबा गाली देते हैं। डाग इज द मेन्जर कहते थे। अमृत न खुद पीते हैं, न दूसरों को पीने देते हैं। यह तो बाप की समझानी है। गाली की तो बात ही नहीं। समझाते हैं देवी चलन रखो। कुत्ते मिसल भौंकते क्यों हो। स्वर्ग में क्रोध होता ही नहीं। बाप समझायेंगे तो सही ना। बाप कुछ भी सामने समझाते थेकब किसको गुस्सा नहीं आता था। बाबा बहुत बैठ स्पिरीचुअलनेस से समझाते थे। ड्रामा कायदे अनुसार चलता रहता है। ड्रामा में कोई भूल नहीं हैं। यह अनादि अविनाशी ड्रामा है। जो भी एक्ट अभी चलती है फिर 5000 वर्ष बाद होगी। कई कहते हैं यह कैसे होंगे। पहाड़ टूट गई फिर आदमी कैसे बनेंगे। अरे तुम नाटक में देखो महल खलास हो गया फिर वह नाटक रिपीटहोगा तो बना हुआ देखोगे ना। यह भी अनादि ड्रामा का बना बनाया खेल है। जो हु बहुत रीपिटहोता रहता है। इसको समझने में बड़ी ब्रेन चाहिए। कोई को बुधि बैठना बड़ा मुश्किल होता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरापी है ना। रामराज्य में इन देवी देवताओं का राज्य था। इन्हों की ही पूजा होती था। बाप ने समझाया है तुम ही पूज्य और पूजारी बनते हो। हमसो का अर्थ भी बच्चों को समझाया है। हम सो देवता हम सो क्षत्री .... बाजोली है। इन्हों की अच्छी रीत याद रखना है। समझाने की कोशिश करनी है। बाबा ऐसे नहीं कहते धंधा आदि छोड़ो। नहीं। सिर्फ सतोप्रधान बनना है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागरापी का राज समझकर समझाओ। मूल बात है मनमनाभव। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। तो सतोप्रधान बन जायेंगे। 5000वर्ष का यह चक्र है जो फिरता रहता हैं। याद की यात्रा है नम्बरवन। बाप कहते हैं मामेकं याद करो मैं सभी बच्चों को साथ ले जाऊंगा। सतयुग में कितने मनुष्य होते हैं। कलियुग में कितने ढेर मनुष्य हैं। कौन इतने सभी को वापस ले गये। इतने सारे जंगल की सफाई किसने की? बागवान खेवैया उस बाप को ही कहते हैं। वही दुःख से छुड़ाकर उस पार ले जाते हैं। पढ़ाई कितनी मिठी लगती है। सबसे ऊंच पढ़ाई है। बाप समझाते हैं नालेज की सोर्स आफ इनकम। तुमको कास्ट का खजाना मिलता है। भक्ति में तो कुछ भी नहीं मिलता है। यहां पांवपड़ने आदि की बात नहीं। वहलोग तो गुरु के आगे जाकर सो जाते हैं। उस भक्ति दुर्गति से अब बाप छुड़ाते हैं। तो ऐसे बाप को याद करना चाहिए ना। बाप को राम2 कह याद करेंगे क्या। बाबा है वह तो समझ लेते हैं। बाप का वरसा जरूर मिलना है। वह खुशी रहती है। बाबा के पास लिखते हैं बाबा हम साहुकार पास गये तो लज्जा आती थी हम तो गरीब हैं।

अरे तुम देह अभिमान में क्यों आते हो। गरीबी ही तुमको अच्छा बनाते हैं। साहुकार होते तो यहां होते भी नहीं। समझते हैं हम साहुकार होता तो हमारा सिर ऊंचा होता। अरे सिर ऊंच वालों की सत्यानाश हो जाती है। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का याद प्यार गुडमार्निंग। आर न स्ते।

ओ